नरेन्द्र जैन की पांच कविताएं

चांदमारी

चांदमारी एक खास जगह होती है
जहां खड़े किये गये नकली पुतलों को
गोली मारी जाती है
कोई न कोई होता ही है
निशाने की जद में

इधर कला और संस्कृति और साहित्य के
प्रभुतासम्पन्न केन्द्र विकसित किये जा रहे
चांदमारी के लिए
शिकार की खोज जारी रहती है
खास किस्म का वातावरण
हवा और धूप भी
खास कोण से बहती और उतरती
एक खास किस्म के वैचारिक सद्‌भाव पर दिया जाता बल
प्रकारांतर से एक खास लक्ष्य की ओर रहते अग्रसर

www.tadbhav.com

यहां जब सम्पन्न होती चांदमारी
गोलियों की आवाजें सुनायी नहीं देतीं
निहायत ही खास ढंग से मारा जाता कोई
किसी को आभास तक नहीं होता
और आंखें निकाल ले जाते वे
वे इसे नयी दृष्टि का विकसित होना कहते हैं

वे यकीन नहीं करते
गोली मार देने जैसे तरीकों में
वे भाषा में सेंध लगाते हैं
और निर्वासित करते किसी को
भाषा के जीवंत कालखंड से
इस चांदमारी में
जिस्म पर नहीं आती कोई खरोंच
लेकिन बहुत से विचार हताहत होते हैं

यहां से गुजर कर भी
नयी शक्ल में आ रहे
कुछ विचार।

घास का रंग

घास कमर तक ऊंची हो आयी है
हरी और ताजा
जब हवा चलती है घास जमीन पर बिछ बिछ जाती है
वह दोबारा उठ खड़ी होती है
हाथ में दरांती लिए वह एक कोने में बैठा है
घास का एक गठ्ठर तैयार कर चुका वह
नीम, अमरूद, जाटौन, केवड़ा, तुलसी आदि के पौधे
उसके आसपास हैं वह सब उसे घास काटते देख रहे
कभी कभार तोते आते हैं अमरूद पर वे कुछ फल
कुतरते हैं और उड़ जाते हैं उनका रंग और घास का
रंग एक है। बरामदे में कहीं चिड़िया चहकती है कभी
हवा के बहते ही पीतल की घंटियां बजने लगती हैं

www.tadbhav.com

हवा है कि मिला जुला संगीत बहता है, दरांती की
आवाज, दरवाजे के पल्ले की आवाज, वाहन की यांत्रिक ध्वनि
और कभी लोहे पर पड़ती हथौड़े की आवाज, गोया दरांती,
हथौड़ा, पल्ला सब वाद्य हैं और धुन बजा रहे हैं
घास काटते काटते अब वह गुनगुना रहा कोई गीत है
या कोई दोहा, स्वर धीमा है, घास जरूर उसे सुन रही।
गली से अभी अभी वह गुजरा है जिसके कंधों पर
बहुत से ढोलक हैं, उसकी अंगुलियां सतत ढोलक बजा
रहीं। कद्दू, लौकी, गिलकी और तुरही की बेलों का
हरा जाल अब ढोलक सुन रहा, हर कहीं हवा और
धूप का साम्राज्य फैला है। पत्थर की एक मेज के आसपास
कोई नहीं है। मेज के पायों से चीटियों का मौन जुलूस
निकल रहा है, सृष्टि का सबसे मौन जुलूस, एक अंतहीन
मानव श्रृंखला आगे बढ़ी जा रही है जैसे

कभी कभार जब सन्नाटा छाया रहता है, मेज के पास
एक शख्स बैठा पाया जाता है। जब धूप की शहतीर
आसमान की सीध से नीचे गिरती है, धूप का
प्रतिबिम्ब उसके प्याले में दिखलायी देता है।

सूखी नदी

यहां से करीब ही
बहती है
सूखी हुई नदी

यहां बैठे बैठे सुनता हूं
सूखी नदी की लहरों का शोर

देखता हूं एक नौका
जो सूखी नदी की लहरों में बढ़ी जा रही

एक सूखी नदी
जीवंत नदी की स्मृति बनी हुई है

www.tadbhav.com

एक
सूखी नदी के किनारे
जल से भरा खाली घड़ा लिए
वह स्त्री
घर की ओर लौट रही है।

बाजरे की रोटियां

बहुत सारे व्यंजनों के बाद
मेज के अंतिम भव्य सिरे पर रखी थीं
बाजरे की रोटियां
मैंने नजरें बचाते बचाते
कुछ रोटियां उठायीं
एक कुल्हड़ में भरा छाछ का रायता
और समारोह से बाहर एक पुलिया पर आ बैठा

अब मेरे पास
भूख थी
और
एक दुर्लभ कलेवा

मैंने पुलिया पर बैठे बैठे वर वधू को आशीष दिया
और उस अंधकार की तरफ बढ़ा
जहां मेरा घर था।

थोड़ी बहुत मृत्यु

मृत्यु आयी और कल मेरी कहानी के एक पात्र को
अपने संग ले गयी
अक्सर उसके घर के सामने से गुजरते हुए
मैं उधर देख लिया करता था
अर्से से वह दिखा ही नहीं
एक दिन कहा किसी ने कि वह बीमार है गम्भीर रूप से
उससे मिलने के लिए थोड़ा बहुत साहस जरूरी था
जो मैंने अपने आप में न पाया

www.tadbhav.com

अंततः एक दिन मैं खामोश बैठा रहा उसके सामने
उसके ओठों पर हल्की सी मुस्कुराहट थी या शायद
रहा हो कोई दर्द
वह बिस्तर पर था और हो चुका था तब्दील एक कंकाल में
देर तक वह देता रहा मुझे डॉक्टरों, हकीमों और वैद्यों का हवाला
उसे कोई मलाल न था
मैं उसे सुनता ही रहा

मुझे याद आये अपनी कहानी के वे प्रसंग
जहां वह शिद्दत से मौजूद था
उसके दरवाजे के वे पल्ले जिनकी दरारों से
दिखायी देती थी बाहर की दुनिया
अक्षरों को ढूंढ ढूंढ कर एक भाषा में ढालने का उसका काम

गिरफ्त खामोशी की तकलीफदेह थी
जब मैं उससे बाहर आया
मेरा पात्र धीरे धीरे पास आती शाम को देख रहा था
शवयात्रा में जुटे आठ दस लोग
तत्परता से उसे फूंक आये
मुझे अब लग रहा कि उसके संग
मेरा भी कुछ जाता रहा है
जैसे थोड़ी बहुत मृत्यु मुझे भी आयी है

अब उधर से गुजरता नहीं देखता मैं
कवेलू वाला छप्पर
अब मैं उस कहानी को भी नहीं पढ़ता जहां रहा आया वह
अब मैं
उसके जिक्र से भी भरसक बचता हूं
उसका गुजरना गोया मेरा भी गुजरना है यहां से।

www.tadbhav.com